विद्याश्री न्यास : गतिविधि 2018

हिन्दी भाषा की परम्पराएँ : प्रयोग और संभावनाएँ पर केन्द्रित दो दिवसीय अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी एवं भारतीय लेखक-शिविर

(वाराणसी, 13–14 जनवरी, 2018)

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली एवं विद्या श्री न्यास के संयुक्त आयोजन भारतीय लेखक शिविर एवं अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी **'हिन्दी भाषा की परम्पराएँ : प्रयोग और संभावनाएँ'** (13–14 जनवरी, 2018) का उद्घाटन उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ के कार्यकारी अध्यक्ष **श्री सदानन्द प्रसाद गुप्त**, वरिष्ठ पत्रकार **श्री अच्युतानंद मिश्र,** जर्मनी से पधारी **सुश्री तात्याना, श्री महेश्वर मिश्र, श्री दिलीप सिंह, श्री अरुणेश नीरन** एवं **श्री दयानिधि मिश्र** के सामूहिक दीप–प्रज्ज्वलन, **श्री लेखमणि त्रिपाठी** के वैदिक स्तवन एवं **श्री उमापति दीक्षित** के पौराणिक मंगलाचरण के साथ हुआ। मंचस्थ अतिथियों ने संभावना कला मंच द्वारा संयोजित विद्याश्री न्यास की चित्रवीथि एवं पोस्टर प्रदर्शनी के उद्घाटन के साथ ही श्री दिलीप सिंह की पुस्तकें **'उजड़े दयारों का बेबाक अफसाना'** एवं **'कहाँ–कहाँ से गुजर गया'** और विद्याश्री न्यास के वर्ष 2016 के आयोजन से सम्बन्धित पुस्तक **'हिन्दी साहित्य में सांस्कृतिक संवेदना और मूल्यबोध'** का लोकार्पण मंचस्थ अतिथियों द्वारा सम्पन्न हुआ। सिक्किम विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग से आयी **टिंकू क्षेत्री** ने नेपाली नृत्य प्रस्तुत किया। **श्री अरुणेश नीरन** ने स्वागत वक्तव्य के साथ संगोष्ठी का विषय–प्रवर्तन करते हुए हिन्दी के विकसित हो रहे आयामों पर प्रकाश डाला और बताया कि हिन्दी अब पहले से बदल रही है, उसमें संसार भर की भाषाओं के शब्द समाहित हो रहे हैं। उन्होंने बताया कि हिन्दी के लिए नए सिरे से व्याकरण की जरूरत है क्योंकि पहले के लिखे व्याकरण में हिन्दी समाहित नहीं हो पा रही।

प्रथम अकादमिक सत्र **'हिन्दी के विविध रूप'** (राष्ट्रभाषा, राजभाषा, सम्पर्कभाषा, साहित्यिक हिन्दी, मानक हिन्दी, हिन्दी की बोलियां एवं जनपदीय साहित्य) के अन्तर्गत **प्रो. दिलीप सिंह** ने बीज वक्तव्य में हिन्दी के निर्माण से जुड़े विविध विषयों एवं रूपों पर विस्तृत प्रकाश डालते हुए कहा कि हमारी प्रथम भाषा हमारी बोलियां हैं– यह गलत धारणा है। यह बहुभाषी देश है, इसलिए यहां सम्प्रेषण को लेकर कम्युनिकेटिव व्याकरण की जरूरत है। **श्री अजयेन्द्र नाथ त्रिवेदी** ने असम में हिन्दी शैली का प्रभाव माना और ब्रज बुली के विकास को रेखांकित किया। इसके साथ विद्यापति के भाषायी प्रभाव और उसके विस्तृत फैलाव की समीक्षा प्रस्तुत की। **श्री अखिलेश दुबे** ने राजभाषा, सम्पर्क भाषा, राष्ट्र भाषा का विवेचन प्रस्तुत करते हुए बताया कि हिन्दी के तमाम संकट हैं, जिनको हल करना आसान नहीं है। एक तरफ हम उसे अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित करने की बात कर रहे हैं और दूसरी ओर वह अपने ही घर में उपेक्षित है। उन्होंने हिन्दी के विकास में साधु, व्यापारी, धर्म–प्रचारक, संन्यासी आदि लोगों के योगदान को महत्त्वपूर्ण माना। **डॉ. कृष्ण चन्द्र पाण्डेय** ने हिन्दी की संस्कृति विकसित करने पर जोर दिया। **श्रीमती करुणा पाण्डेय** अपने शोध लेख 'राष्ट्रभाषा हिन्दी की चुनौतियॉं' में बताया कि हिन्दी आदि काल से जनमानस की भाषा रही है, उसका विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी से भी सम्बन्ध स्थापित होना चाहिए और अंग्रेजी के बराबर या उससे अधिक उसको महत्त्व प्रदान करना चाहिए। **श्री उमेश कुमार सिंह** ने भाषाई गरिमा को व्याख्यायित करते हुए कहा कि भाषा हमारे लिए सिर्फ भाषा ही नहीं है, बोली ही नहीं है, संपर्क का माध्यम ही नहीं बल्कि वह हमारे अस्तित्व और अस्मिता से जुड़ी हुई है। यह हमारे चिंतन की परम्परा है जिसे खण्ड–खण्ड नहीं किया जा सकता। उन्होंने कहा कि हमारी हिन्दी का तब

तक कोई मतलब नहीं है, जब तक पूरे हिन्द देश के जीवन की अस्मिता से उसका जुड़ाव न हो जाय। **श्री अमर नाथ शर्मा** ने कहा कि जिस तरह से भोजपुरी, छत्तीसगढ़ एवं राजस्थानी को अष्टम सूची में शामिल करने की बात चल रही है, वह हिन्दी के विकास में बाधक है, इससे हिन्दी कमजोर होगी। इसके साथ अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों के हो रहे विकास पर चिंता व्यक्त की। **श्री राजेन्द्र प्रसाद पाण्डेय** ने संस्कृत के व्याकरण को सर्वश्रेष्ठ मानते हुए बतलाया कि हिन्दी दूसरी भाषाओं के साथ सामंजस्य करती चलती है। उसी के अनुरूप उसका व्याकरण ढल सकता है। बोलियों को भाषाओं की सबसे बड़ी शक्ति बताया और कहा हमें ऐसे व्याकरण की तलाश करना चाहिए जो दोनों के सामंजस्य का रास्ता बनाये न की दूरी। विशिष्ट अतिथि **सुश्री तात्याना** ने जर्मनी एवं रूस में हो रहे हिन्दी के शिक्षण–प्रशिक्षण के विषय में अपने अनुभवों को साझा करते हुए बताया कि विदेशी लोग अपने व्यवसाय, पर्यटन, भारतीय संस्कृति की जानकारी के लिए हिन्दी सीख रहे हैं। मुख्य अतिथि **श्री अच्युतानंद मिश्र** ने कहा कि जिस हिन्दी के स्वाधीनता संग्राम में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई, उसका इतिहास अतुलनीय है। उस समय सभी ने हिन्दी को प्रोत्साहित किया और हिन्दी ने भी सभी को प्रोत्साहित किया है। किन्तु स्वतंत्रता के बाद इस की संस्कृति नही विकसित हो सकी जो चिन्ता का विषय है। आज पत्रकारिता संस्कृति के दायरे से बाहर हो गयी है, उसमें बाजारूपन आ गया है, जो हिन्दी के लिए चुनौती है। हमें हिन्दी के प्रति हीन–भावना से ग्रसित नहीं होना है और न ही इसके प्रयोग में संकोच करना है। अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में **श्री सदानन्द प्रसाद गुप्ता** ने हिन्दी संस्थाओं की भूमिका का उल्लेख करते हुए पारिभाषिक शब्दावली की कृतियों की समीक्षा प्रस्तुत की तथा धर्म, दर्शन, विज्ञान एवं शिक्षा जैसे विषयों के प्राध्यापन में हिन्दी माध्यम अपनाने का सुझााव दिया साथ ही हिन्दी को अपनाने के लिए दृढ़ इच्छा की आवश्यकता पर जोर दिया। धन्यवाद ज्ञापन **श्री महेश्वर मिश्र** ने किया और कहा कि स्वतंत्रता के बाद पहली चिंता देश की भाषाओं के लिए होनी चाहिए थी एवं विज्ञान की भाषा हिन्दी बनाने का सुझाव दिया, उन्होंने कहा कि जन–सामान्य के लिए विज्ञान का इतिहास लिखने की आवश्यकता है। इस सत्र का संचालन **श्री सत्यदेव त्रिपाठी** एवं **श्री वशिष्ठ अनूप** ने किया।

द्वितीय अकादमिक सत्र **'व्याकरण और वर्तनी'** के अन्तर्गत **श्रीमती सुभद्रा राठौर** ने शशि थरूर की टिप्पणी– जरूरत क्या है हिन्दी को संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा बनाने की– से अपनी बात शुरू की और कहा– इस तरह की तमामा राजनीतिक बातें हिन्दी के विकास में बाधा पैदा करती हैं। उसकी लिपि सरल एवं वैज्ञानिक बनाने पर जोर देते हुए अफवाहों से बचने की बात की। आशा व्यक्त की कि यदि संयुक्त राष्ट्र संघ में हिन्दी को भाषा के रूप में स्वीकार कर लिया तो हिन्दी स्वयमेव ही राष्ट्रभाषा बन जायेगी। **श्रीमती विद्या केशव चिटको** ने नासिक में होने वाली रामलीला, रासलीला एवं लोकजीवन के विविध त्योहारों की चर्चा करते हुए मराठी एवं हिन्दी के अन्तरसंबंधों के बारे में विस्तार से बताया। **श्री राम प्रकाश कुशवाहा** ने कहा कि हर शब्द एक प्रतीक है। हम बहुत अधिक प्रतीकों का प्रयोग करते हैं। उन्होंने बताया कि प्रतीकों में बहुत अर्थ दिये हैं, जिन्हें जानने की जरूरत है और ये संदर्भ के आधार पर ही समझे जा सकते हैं। **श्रीमती प्रेमशीला शुक्ल** ने अपने शोध पत्र 'मानक हिन्दी एवं इसकी बोलियों का अन्तःसम्बन्ध' के माध्यम से स्पष्ट किया कि हिन्दी आर्य भाषा है जो विस्तृत क्षेत्र में बोली जाती है। मुगलों एवं ब्रिटिश हुकूमत ने इसे इसीलिए अपनाया क्योंकि वे शासन करना चाहते थे। जनभाषा की महत्ता पर विस्तृत प्रकाश डाला और जनपदीय भाषा भोजपुरी के अन्तर को स्पष्ट किया कि हिन्दी बाहरी शब्दों को यथावत ग्रहण कर लेती है जबकि भोजपुरी अपने में उसे ढाल लेती है। **श्रीमती विद्याविन्दु सिंह** ने 'हिन्दी भाषा की परम्परा' पर बोलते हुए स्पष्ट किया कि हिन्दी को राजभाषा, राष्ट्रभाषा एवं विश्वभाषा के स्तर पर प्रतिष्ठित करने के लिए केवल राजनीतिक सत्ताएं ही नहीं जिम्मेदार

हैं, बल्कि हर एक व्यक्ति की जिम्मेदारी है, जिसे पूरे आत्मविश्वास के साथ पूरा करने को उन्होंने प्रेरित किया। उन्होंने यह भी कहा कि शब्दकोश से 'अहिन्दी' शब्द निकाल देना चाहिए क्योंकि यह अन्य भारतीय भाषाओं से दूरी बनाने को संकेतित करता है। **श्री प्रभाकर मिश्र** ने हिन्दी की सांस्कृतिकता का पक्ष लेते हुए स्वीकार किया कि जो तत्सम विरोधी है, वह हिन्दी विरोधी है। भाषा तो लोक स्वीकृति के आधार पर तैयार होती है। **श्री अवधेश प्रधान** ने 'हिदी व्याकरण और कोश निर्माण' शीर्षक आलेख के अन्तर्गत किशोरीदास बाजपेयी के 'हिन्दी व्याकरण' की चर्चा करते हुए उसे मानक माना। उन्होंने हिन्दी व्याकरण के ऐतिहासिक निर्माण की प्रक्रिया पर भी प्रकाश डाला और वर्तमान समय की चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि भारत की जितनी भी भाषाएं हैं उन सबकी चिंता करनी चाहिए। **श्री चितरंजन मिश्र** ने भाषा को समाज और संस्कृति से जोड़ते हुए कहा कि भाषा का बनना और देश का बनना अलग नहीं होता। जब भाषा बनती है तो देश बनता है और जब भाषा बिगड़ती है तो देश बिगड़ता है। इसलिए हमें अपनी भाषा को बनाना होगा ताकि देश भी बनता रहे। अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में **श्री अनंत मिश्र** ने हिन्दी को लेकर अपलाप पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि जब हम ज्यादा–ज्यादा हिन्दी करते हैं तो हिन्दी नष्ट हो जाती है। इसलिए हमें हिन्दी हिन्दी न चिल्ला कर भाषा बनाने की चिंता करनी चाहिए। हिन्दी की नौकरी करने वालों से हिन्दी के विकास की उम्मीद नहीं करनी होगी। हिंदी का विकास आम लोग करते हैं, जनपदीय भाषाएं करती हैं। इस सत्र का संचालन **विजेन्द्र पाण्डेय** एवं **बलभद्र** ने किया।

संगोष्ठी के पहले दिन के अंत में काव्य सन्ध्या का आयोजन किया गया जिसके अन्तर्गत **श्री सिद्ध नाथ शर्मा, श्री वशिष्ठ अनूप, श्री अशोक कुमार 'घायल', श्री सुरेन्द्र वाजपेयी, श्री विद्याविन्दु सिंह, श्री करुण पाण्डेय, श्री रामौतार पाण्डेय, श्री सपना सिंह, श्री दीपंकर भट्‌टाचार्य, श्री अलकबीर, श्री पवन कुमार, श्री दीपक कुमार, श्री शम्भूनाथ श्रीवास्तव, श्री कुँवर सिंह, श्री करुण सिंह, श्री नरोत्तम शिल्पी** एवं **श्री परमानंद आनंद** ने कविता पाठ किया। अध्यक्षता **श्री हरीराम द्विवेदी** और संचालन **श्री जितेन्द्र नाथ मिश्र** ने किया।

दूसरे दिन की शुरूआत सम्मान समारोह के साथ हुई। श्रीयुत **श्रीराम परिहार** को विद्यानिवास मिश्र स्मृति सम्मान, **श्री अनिरूद्ध त्रिपाठी 'अशेष'** को आचार्य विद्यानिवास मिश्र लोककवि सम्मान, **श्रीमती विभा पाण्डेय** को राधिका देवी लोककला सम्मान एवं **श्री हिमांशु उपाध्याय** से श्री कृष्ण तिवारी गीतकार सम्मान समारोहपूर्वक प्रदान किया गया। स्वीकृत वक्तव्य के रूप में **श्रीराम परिहार** ने कहा कि जनपदीय भाषाओं को जीवित करने का एक ही तरीका है कि हम अपनी–अपनी बोली में बात करें। हिन्दी की गहरी चिन्ता व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि यह हमारे भारतीय चिंतन से जुड़ी हुई है, हमें इसके स्वरूप को न बिगड़ने देना चाहिए। **श्री अनिरुद्ध त्रिपाठी 'अशेष'** ने सारा संकट मानवीय चित्तवृत्तियों को माना, जिसे बदलने की बात की। **श्रीमती विभा पाण्डेय** ने कहा कि साहित्य, संगीत और कला तीनों का सुन्दर समन्वय ही संस्कृति की पहचान है, जो कलात्मक रूप में एक–साथ घुल मिल जाते हैं। **श्री हिमांशु उपाध्याय** ने स्वीकृति वक्तव्य के रूप में एक भावभीना गीत प्रस्तुत किया। सम्मान समारोह एवं स्वीकृत वक्तव्य के बाद **डॉ. सुनील कुमार मानस** द्वारा संपादित पत्रिका **'आलोचन दृष्टि'** (डॉ. नगेन्द्र पर केन्द्रित विशेषांक) एवं श्री हरिसिंह पाल द्वारा संपादित **'नागरी संगम'** का लोकार्पण किया गया।

तृतीय अकादमिक सत्र **'हिन्दी को समृद्ध करने की चुनौती'** के अन्तर्गत विशिष्ट अतिथि **श्री रजनीश शुक्ल** ने लोक की विस्तृत व्याख्या करते हुए उसे चर–अचर जगत से जोड़ा और बताया कि अनुभूति से प्राप्त ज्ञान की अभिव्यक्ति ही लोक है, जो मनुष्यत्व का विकास करता है। **श्री सुरेन्द्र प्रताप सिंह** ने पंडित विद्यानिवास मिश्र की स्मृतियों के माध्यम से लोक एवं उससे जुड़े संस्कार, ज्ञान एवं चिंतन की विस्तृत समीक्षा प्रस्तुत की। उन्होंने कहा कि पंडित जी नई–नई परम्पराओं को आत्मसात

करते हुए चलते थे। **श्रीनिवास पाण्डेय** ने भाषा की चिन्ता को रोजी, रोटी की संवेदना से जोड़ते हुए उसे समृद्ध करने की बात की। साथ ही बताया कि हमारे भारतीय समाज का आध्यात्मिक चिंतन इतना गहरा है कि वह कभी नष्ट नहीं हो सकता। **श्री आशुतोष सिंह** ने अपने शोधपत्र 'हिन्दी में विज्ञान और तकनीकी की सम्भावनाएँ' के माध्यम से हिन्दी के विकास को सकारात्मक रूप में देखा। उनका मानना है कि संचार साधन के माध्यम से हिन्दी का व्यापक फैलाव हुआ है। **श्रीमती भारती गोरे** ने अपने शोध पत्र 'अहिन्दी भाषा–भाषी क्षेत्रों में हिन्दी भाषा सीखने की कठिनाइयाँ' के माध्यम से मराठी एव हिन्दी के शाब्दिक उच्चारण की समानताओं एवं असमानताओं को रेखांकित किया, साथ ही बताया कि महाराष्ट्र में 1956 के बाद मराठी ने जोर पकड़ा जबकि पहले वहाँ हिन्दी का वर्चस्व रहा। **श्री अवधेश शुक्ल** ने कहा कि हिन्दी भाषा को सभी भारतीय भाषाओं को जोड़ने के लिए व्यापक सोच के साथ काम करने की जरूरत है। **श्री हरि सिंह** पाल ने हिन्दी के अशुद्ध लेखन पर चिंता व्यक्त की। बलगारिया से पधारी विशिष्ट अतिथि **सुश्री मिलेना ब्रोतोएवां** ने बताया कि हिन्दी का विकास अन्तरराष्ट्रीय क्षेत्रों में बहुत तेजी से हुआ है। विदेशी छात्रों के अज्ञान को दूर करते हुए इलेक्ट्रानिक मीडिया ने उसे समृद्ध बताया है। उन्होंने संस्कृति से आदान–प्रदान के लिए इसे जरूरी कदम बताया है। मुख्य अतिथि **श्री गंगाप्रसाद विमल** ने बताया कि भाषा का आधार लोक संस्कृति है, वहीं से वह तत्व ग्रहण करती है। इसलिए कोश निर्माण हेतु लोक में जाना जरूरी है और लोक के अनुरूप ही शब्द कोश का निर्माण आवश्यक है। साथ ही उन्होंने बताया कि भारतीय भाषाओं में आदान–प्रदान बहुत ही सरल है क्योंकि उसके मिथक एवं चिंतन एक हैं। उ.प्र. भाषा संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष **श्री राजनारायण शुक्ल** ने अध्यक्षीय वक्तव्य में बताया कि आज की जरूरत के मुताबिक हिन्दी के स्वरूप को विकसित करने की जरूरत है। अनुवाद में क्षेत्रीय भाषाओं के शब्द लेने चाहिए ताकि अनुवाद की लोकप्रियता बढ़े। इस सत्र का सफल संचालन **श्री श्रद्धानन्द** एवं **श्री प्रकाश उदय** ने किया।

समापन समारोह एवं चतुर्थ अकादमिक सत्र **'अहिन्दी भाषा–भाषी क्षेत्र में हिन्दी और प्रसार की चुनौतियाँ, अन्य भाषाओं से सम्बन्ध और विश्व हिन्दी'** के अन्तर्गत **श्रीमती अनीता पंडा** ने पूर्वोत्तर भारत में हिन्दी की परम्परा और उसके प्रसंगों को अपने शोध–पत्र द्वारा रेखांकित किया। उन्होंने स्पष्ट बतलाया कि पूर्वोत्तर भारत में पूर्वोत्तरी भाषा के साथ–साथ हिन्दी का विकास बहुत पहले से हो रहा है, जो निरन्तर जारी है। **सुश्री आरती स्मित** ने 'वर्तनी की समस्या' पर चर्चा करते हुए स्वतन्त्रता के पहले एवं उसके बाद की हिन्दी का तुलनात्मक विवेचन प्रस्तुत करते हुए भाषागत प्रयोगों की अशुद्धि को लेकर चिंता प्रगट की। साथ ही बताया कि शिशु या बालक वही सीखता है, जो वह बचपन से देखता है, अतः इस बचपन को गढ़ना है तांकि भाषागत प्रयोग एवं वर्तनी सही हो सके। **श्री बलिराज पाण्डेय** ने तुलसी, निराला, नागार्जुन, त्रिलोचन एवं मुक्तिबोध के काव्य के आधार पर काव्यभाषा का लोक–जीवन से सीधा संबंध बताया। उन्होंने बताया कि भाव ग्रहण की क्षमता जिसके पास जितनी होती है, वह उतना ही अर्थग्रहण कर पाता है। **श्री विष्णु कुमार राय** ने केरल एवं दक्षिण भारत में हिन्दी के प्रचार–प्रसार की विस्तृत चर्चा करते हुए देवदास गांधी के योगदान का भी हवाला दिया। उन्होंने बताया कि दक्षिण भारत में हिन्दी का उतना विरोध नहीं है जितनी राजनीतिक बयानबाजी होती रहती है। उसके अतिरिक्त वहाँ की हिन्दी समितियों के योगदान पर भी विस्तृत प्रकाश डाला। **श्री ब्रजेन्द्र त्रिपाठी** ने हिन्दी के विविध रूपों की चर्चा करते हुए उसके इतिहास से सम्बन्धित तथ्यों पर प्रकाश डाला और दक्षिण भारत में हिन्दी को ले जाने वाले मुहम्मद तुगलक की दृष्टि की विवेचना प्रस्तुत की। साथ ही दक्खिनी काव्य को देवनागरी में पुनः रूपान्तरित करने की बात कही। **श्री देवेन्द्र शुक्ल** ने अपने अनुभवों को साझा करते हुए अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी की बढ़ती हुई स्वीकार्यता पर अपना वक्तव्य केन्द्रित किया।

श्री विजयशंकर शुक्ल ने हिन्दी साहित्य की शास्त्रीय परम्परा को 16वीं सदी से स्वीकार किया और हिन्दी के वैश्विक आयाम की चर्चा करते हुए बतलाया कि हिन्दी अपने स्वरूप में परिवर्तन करते हुए वैश्विक धरातल पर आगे बढ़ रही है। विशिष्ट अतिथि **श्री आनंदवर्द्धन शर्मा** ने अपनी वैश्विक यात्राओं के संस्मरणों के आधार पर विदेशों में बढ़ रही हिन्दी की चर्चा करते हुए बताया कि अब कई देशों में हिन्दी देखने सुनने एवं समझने को मिल रही है। विदेशी लोग भारतीय संस्कृति, धर्म, मोक्ष, पर्यटन, कामकाजी हिन्दी की जानकारी हेतु लगातार हिन्दी पढ़ रहे हैं। इससे जहाँ एक ओर उन्हें आजीविका मिल रही है वहीं दूसरी ओर हिन्दी फिल्मों के मनोरंजन से भी जुड़ रहे हैं। मुख्य अतिथि **श्री कमलेश दत्त त्रिपाठी** ने कहा कि मैं लगभग पूरे भारत में भ्रमण करता रहा हूँ, लेकिन मुझे हिन्दी को लेकर कोई परेशानी नजर नहीं आती। काल्पनिक समस्या है कि भारत में हिन्दी का विरोध हो रहा है। उन्होंने कहा हिन्दी को भारतीय भाषाओं से खतरा नहीं है, खतरा है अंग्रेजी से, उन्होंने भारतीय भाषाओं को सृजनात्मक रूप से जोड़ने की भी बात की। समापन सत्र की अध्यक्षता कर रहे **श्री त्रिभुवन कुमार शुक्ल** ने बताया कि भाषा हमेशा लोक से रस ग्रहण करती है। उसी के आधार पर उसमें परिवर्तन आता है। उन्होंने एक ओर अहिन्दी प्रान्तों में हिन्दी को फैलाने पर जोर देने को कहा तो दूसरी ओर उसके मानकीकरण पर भी ध्यान देने की आवश्यकता पर बल दिया। धन्यवाद–ज्ञापन करते हुए **श्री महेश्वर मिश्र** ने बताया कि भारतीय भाषाओं में एकता दो बातों पर निर्भर हो सकती है। पहले के अन्तर्गत अनुभव है तो दूसरे के अन्तर्गत आवा–जाही को रखा जा सकता है। इस आवा–जाही से भारतीय किसान, मजदूर आदि अपने अनुभवों को साझा कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि हिन्दुस्तान में अंग्रेजी का भूत–सवार है, जिससे बचने की जरूरत है। साथ ही हिन्दी में प्रस्तुतीकरण एवं संवाद की भाषा के लिए विशेष दक्षता के प्रशिक्षण की व्यवस्था बड़े पैमाने पर करने की मांग की। इस सत्र का संचालन **श्रीमती ऋचा सिंह** ने किया।

संगोष्ठी के मध्य में युवा–समवाय के अन्तर्गत आयोजित कविता, कहानी व आलेख प्रतियोगिता में विजेता प्रतिभागियों क्रमशः **सुश्री यांकी तांगू** (वर्धा), **श्री आकाश राव** (सिक्किम), **श्री कृष्ण कुमार** (सिक्किम), **सुश्री सपना सिंह** (इलाहाबाद) को पुरस्कृत किया गया। पोस्टर एवं कला प्रदर्शनी के लिये संभाला कलामंच के निदेशक श्री राजकुमार सिंह को अंगवस्त्र से सम्मानित किया गया। समारोह में भारतवर्ष के कोने–कोने से और स्थानीय विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय से भारी संख्या में अध्यापकों, छात्र, छात्राओं ने उपस्थित होकर कार्यक्रम को सफल बनाने में महत्त्वपूर्ण योगदान किया।

पं. विद्यानिवास मिश्र की पुण्यतिथि पर संस्कृत कवि–गोष्ठी

14 फरवरी को वाराणसी में विद्याश्री न्यास एवं बौद्ध दर्शन विभाग, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्त्वावधान में योग साधना केंद्र के सभागार में प्रो. यदुनाथ दुबे की अध्यक्षता में पंडित विद्यानिवास मिश्र की पुण्यतिथि पर प्रो. शिवजी उपाध्याय के मुख्य आतिथ्य एवं प्रो. राजा राम शुक्ल के विशिष्ट आतिथ्य में संस्कृत कवि गोष्ठी एवं सम्मान समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें सर्वश्री केशव पोखरेल, ध्रुव सापकोटा, पवन कुमार शास्त्री, कमला पाण्डेय, विवेक कुमार पाण्डेय, धर्मदत्त चतुर्वेदी, उपेन्द्र पाण्डेय, राजेन्द्र प्रसाद पाण्डेय, गायत्री प्रसाद पाण्डेय, प्रभुनाथ द्विवेदी व राजनाथ त्रिपाठी ने संस्कृत काव्य पाठ किया। इस अवसर पर आचार्य रेवाप्रसाद द्विवेदी को ''रामरुचि त्रिपाठी संस्कृत कवि सम्मान'' से सम्मानित किया गया। सम्मान स्वरूप उन्हें अंगवस्त्र, नारिकेल, पुस्तक प्रतीक, प्रशस्ति–पत्र एवं सम्मान राशि से विभूषित किया गया। संचालन डॉ. गायत्री प्रसाद पाण्डेय ने किया तथा धन्यवाद डॉ. दयानिधि मिश्र ने किया।

पण्डित विद्यानिवास मिश्र स्मृति व्याख्यान एवं राष्ट्रीय परिसंवाद
'पाणिनीय भाषा–चिन्तन'

संस्कृत एवं अन्य प्राच्य भाषा विभाग, महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी के संयुक्त तत्त्वावधान में मानविकी संकाय के सभागार में 'विद्यानिवास मिश्र स्मृति व्याख्यान माला' के अन्तर्गत 'पाणिनीय भाषा चिंतन' पर राष्ट्रीय परिसंवाद तीन सत्रों में सम्पन्न हुआ। उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि काशी विद्यापीठ, वाराणसी के कुलपति प्रो. टी.एन. सिंह, विशिष्ट अतिथि प्रो. प्रभुनाथ द्विवेदी एवं अध्यक्ष प्रो. गया राम पाण्डेय थे। कार्यक्रम की शुरुआत अरूण शर्मा के मंगलाचरण, छात्राओं के कुलगीत–गायन, सरस्वती प्रतिमा एवं विद्यानिवास मिश्र के चित्र के माल्यार्पण एवं दीप–प्रज्ज्वलन से हुई। प्रो. टी.एन. सिह ने अपने उद्घाटन भाषण में विश्व में संस्कृत के प्रति बढ़ रही जिज्ञासा का उल्लेख करते हुए संस्कृत को तकनीक से जोड़ने पर बल दिया। विशिष्ट अतिथि प्रो. प्रभुनाथ द्विवेदी ने पाणिनी के रचना–कर्म का विराट विवेचन करते हुए बताया कि पाणिनी ने लोक में प्रचलित भाषा का वैज्ञानिक आधार प्रस्तुत किया। प्रो. गया राम पाण्डेय ने पाणिनी के अष्टाध्यायी को भारतीय मनीषा के चमत्कार के रूप में व्याख्यायित किया।

द्वितीय एवं तृतीय सत्र के मुख्य वक्ता थे प्रो. श्रीनिवास वरखेड़ी, कुलपति, कविकुल कालीदास विश्वविद्यालय, नागपुर तथा इनकी अध्यक्षता क्रमशः प्रो. गंगाधर पण्डा एवं प्रो. हरे राम त्रिपाठी ने की। प्रो. वरखेड़ी अपने पहले विद्वततापूर्ण व्याख्यान में पाणिनी के विश्वतोमुखी प्रतिभा का उल्लेख करते हुए विस्तार से बताया कि पाणिनी का अष्टाध्यायी न केवल भारतीय भाषाओं वरन् विश्व की भाषाओं के लिए एक मॉडल है, जिसमें शब्द और अर्थ की संगति अप्रतिम है और भाषा के स्वरूप के बजाय उसके तत्त्व (शब्द और अर्थ से सम्बन्धित) को जानने पर बल दिया। अपने दूसरे व्याख्यान में अष्टाध्यायी के संगणकीय स्वरूप पर विस्तार से चर्चा करते हुए बताया कि किस प्रकार पाणिनी भाषा को विज्ञान की अपेक्षा कला के रूप में परिभाषित किया तथा वरखेड़ी जी ने अपने पी.पी.टी. (Power Point Prasantution) के माध्यम से अष्टाध्यायी के गणतीय सूत्रों का विवचेन करते हुए बताए कि किस प्रकार पाणिनी ने 2500 वर्ष पूर्व कम्प्यूटर की भाषा का सृजन किया, तब, जब उसका नामो–निशान भी नहीं था और अपने वक्तव्य को उदाहरणों द्वारा सप्रमाण पुष्ट किया, जो बेहद प्रभावशाली रहा तथा अष्टाध्यायी के प्रति एक उत्कट जिज्ञासा पैदा करने में सफल रहा। श्री वरखेड़ी ने पाणिनी के अष्टाध्यायी को कम्प्यूटर से जोड़कर नये प्रयोग की आवश्यकता पर बल दिया तथा गणित के स्थान पर अष्टाध्यायी के अध्ययन को श्रेयस्कर बताया।

प्रो. गंगाधर पण्डा और प्रो. हरे राम त्रिपाठी ने वरखेड़ी के वक्तव्य की प्रसंशा करते हुए उनके कम्प्यूटर एवं अष्टाध्यायी के सूत्रों की संगति के महत्त्व पर सहमति व्यक्त की और पाणिनी को सबसे बड़े भाषा चिन्तन के रूप में देखे जाने पर जोर दिया। स्वागत भाषण संस्कृत विभाग की अध्यक्ष प्रो. उमारानी त्रिपाठी, धन्यवाद ज्ञापन विद्याश्री न्यास के सचिव डॉ. दयानिधि मिश्र एवं सत्रों का संचालन क्रमशः डॉ. दीपक कुमार एवं डॉ. अनीता ने किया।

परिसंवाद में प्रो. राममूर्ति चतुर्वेदी, डॉ. गायत्री प्रसाद पाण्डेय, डॉ. सुनील कुमार मानस सहित बड़ी संख्या में प्राध्यापक, शोधार्थी एवं छात्र–छात्राएँ उपस्थित रहें।

गौरी देवी स्मृति व्याख्यान एवं ''भारतीय लोकदृष्टि एवं कलादृष्टि'' पर राष्ट्रीय परिसंवाद

ललित कला विभाग, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, श्रद्धानिधि न्यास एवं विद्याश्री न्यास के संयुक्त तत्वावधान में ललित कला विभाग के सभागार में श्रद्धानिधि व्याख्यानमाला के अंतर्गत पं. विद्यानिवास की माता श्रीमती गौरी देवी स्मृति व्याख्यान एवं 'भारतीय लोकदृष्टि और कलादृष्टि' पर राष्ट्रीय परिसंवाद दो सत्रों में सम्पन्न हुआ। इसके मुख्य वक्ता प्राख्यात् कलाविद् एवं निबंधकार श्री नर्मदा प्रसाद उपाध्याय (इंदौर) थे तथा पहले सत्र की अध्यक्षता प्रो. अवधेश प्रधान एवं दूसरे सत्र की अध्यक्षता प्रो. राजेश्वर आचार्य ने की और प्रो. मारूति नंदन प्रसाद तिवारी ने पूरे विषय का विद्वतापूर्ण समाहार करते हुए अपना वक्तव्य दिया।

श्री नर्मदा प्रसाद उपाध्याय ने दो सत्रों में अपने व्याख्यान में बताया कि भारतीय लोक एवं कलादृष्टि पारचात्य की 'फोक' एवं 'पोट्रेट' की अवधारणा से सर्वथा अलग है। हमारी परम्परा में लोक वाचिक परम्परा से जुड़ा हुआ है, लोक में ही हमारा समग्र निहित है। पाश्चात्य व्यक्तिवादी दृष्टि के विपरीत भारतीय लोक और कलादृष्टि व्यक्तिवादी न होकर 'स्व' के विसर्जन की यात्रा है और इसमें छोटे–बड़े उपादानों का कोई भेद नहीं है अपितु दोनों एक–दूसरे पर निर्भर हैं। भारतीय कलादृष्टि दैहिक सौन्दर्य से इतर लावण्य से ओत–प्रोत है, जिसकी पुष्टि में श्री उपाध्याय जी ने कालिदास के कई श्लोकों को उद्धृत किया। उन्होंने बताया कि भारतीय लोक और कलादृष्टि में कोई अन्तर नहीं है तथा दोनों निरतंर गतिशील हैं। अपने दूसरे व्याख्यान में स्लाइड के माध्यम से भारतीय कला के लघु चित्रों की यात्रा करायी, जो अत्यन्त प्रभावकारी एवं ज्ञानवर्द्धक रहा।

प्रो. अवधेश प्रधान ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में भारतीय लोक एवं कलादृष्टि में भाव की प्रधानता और अनुभव पर बल दिया। लोक और कला बार–बार घटित होकर नवीन अनुभूति प्रदान करते हैं और हमारी समग्र जीवन दृष्टि ही लोक और कला का अन्यतम उदाहरण है। प्रो. मारुतिनंदन प्रसाद तिवारी ने अपने शोधपरक व्याख्यान में बताया कि हमारी भारतीय दृष्टि प्रकृति की सत्ता का सह–अस्तित्व मानव से जोड़ने का एक उपक्रम है। जब हम किसी की आराधना करते हैं तो हमें तब तक तृप्ति नहीं होती, जब तक उसकों हम आत्मसात नहीं कर लेते। भारतीय लोक और कलादृष्टि में अद्वैत का भाव परिलक्षित होता है। प्रो. राजेश्वर आचार्य ने लोक को आत्मा से सम्बद्ध बताया और कला को दर्शन की व्यावहारिक अभिव्यक्ति के रूप में प्रकट किया।

व्याख्यान एवं परिसंवाद का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलन, सरस्वती, विद्यानिवास मिश्र एवं श्रीमती गौरी देवी के चित्रों के माल्यार्पण एवं अरूण शर्मा के मंगलाचरण से हुआ। ललित कला विभाग की अध्यक्ष प्रो. मंजुला चतुर्वेदी ने अतिथियों का माल्यार्पण एवं अंगवस्त्र प्रदान कर सम्मान एवं स्वागत किया। धन्यवाद ज्ञापन विद्याश्री न्यास एवं श्रद्धानिधि न्यास के सचिव डॉ. दयानिधि मिश्र ने किया। संचालन डॉ. सुनील कुमार विश्वकर्मा ने की।

परिसंवाद में प्रो. श्रद्धानंद, प्रो. सभाजीत यादव, प्रो. राकेश मिश्र, डॉ. सुचिता शर्मा, डॉ. उदयन मिश्र, डॉ. सुनील कुमार मानस, लोक जाङ्ग, सोच विचार के संपादक नरेन्द्र नाथ मिश्र सहित भारी संख्या में शोधार्थी एवं छात्र–छात्राओं ने भाग लिया।